हिमपात में गुलाब के फूलों का गायन

“सप्ताह के सातों दिन और वर्ष के हर सप्ताह, मेलिन अपने पिता के रेस्तरां में खाना पकाती थी. अपने स्वादिष्ट पकवानों के लिए उनका रेस्तरां नए संसार में बहुत प्रसिद्ध था.” लेकिन मेलिन के पिता इस बात का ध्यान रखते थे कि अच्छा खाना बनाने के लिए उसे कोई श्रेय न मिले. वह हर किसी से कहते थे कि खाना उसके आलसी बेटों ने बनाया था.

जब दक्षिण चीन का गवर्नर नए संसार में आया और उसे मेलिन का बनाया पकवान बहुत पसंद आया तो उसके पिता ने वही बात दोहराई. गवर्नर ने तुरंत आदेश दिया कि दोनों भाई उसके सामने वही पकवान बनायें. जब दोनों वह पकवान नहीं बना पाए तो मेलिन को आकर उसे बनाना पड़ा. इस घटना के बाद गवर्नर को ज्ञात हुआ कि नए संसार और पुराने संसार में क्या अंतर था.

इस में कहानी बीसवीं शताब्दी के आरंभ में चाइना-टाउन में बसे लोगों के जीवन का सुंदर वर्णन किया गया है.

सप्ताह के सातों दिन और वर्ष के हर सप्ताह मेलिन अपने पिता के रेस्तरां में खाना बनाती थी. अपने स्वादिष्ट पकवानों के लिए यह रेस्तरां नए संसार में बहुत प्रसिद्ध था.
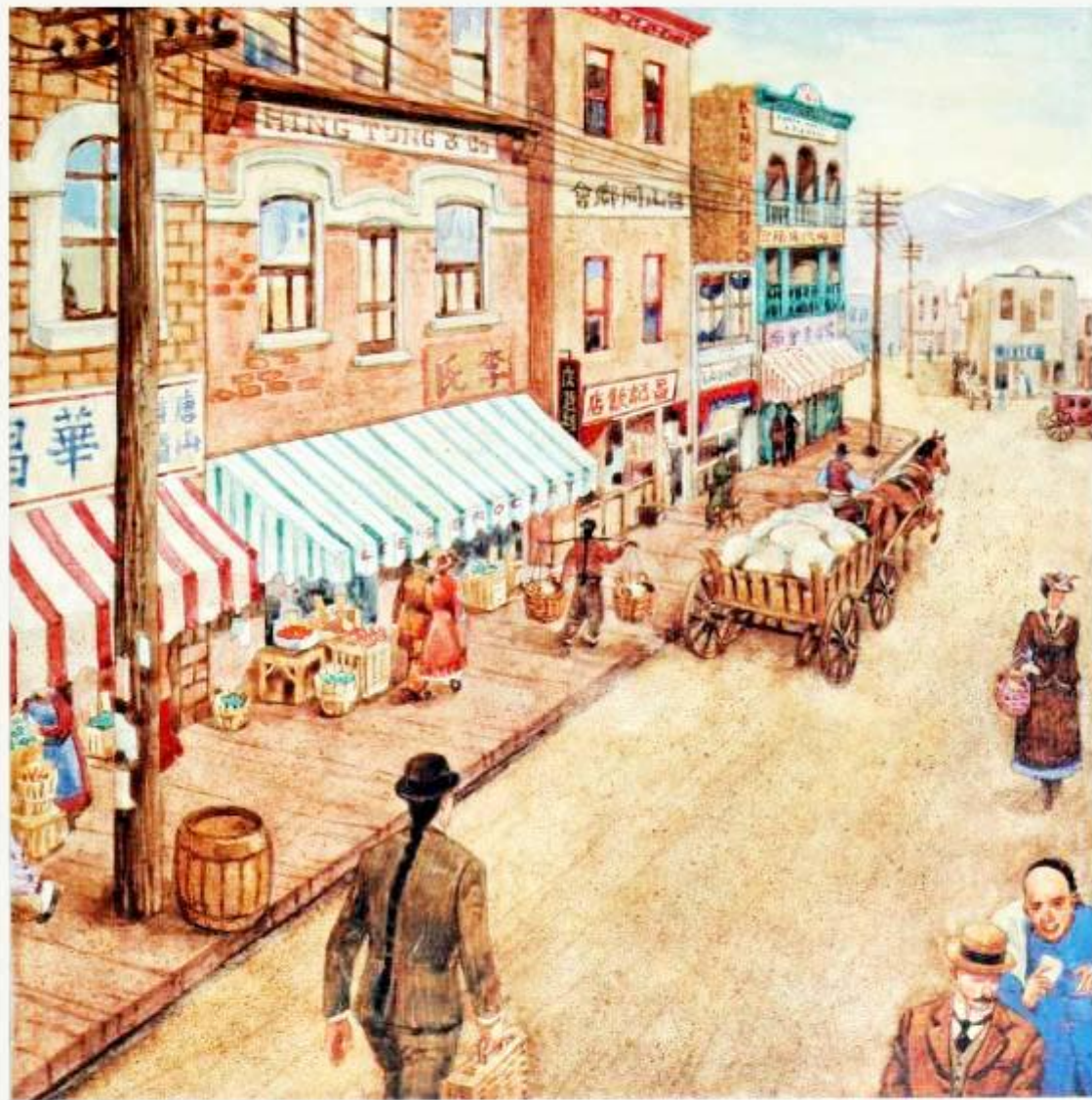
लेकिन जब लोग रेस्तरां के शैफ की सराहना करते या उसके लिए बख्शीश दे जाते तो वह मेलिन तक न पहुँचती क्योंकि उसका पिता रसोईघर का दरवाज़ा सदा बंद रखता था और हर किसी से कहता था कि उसके दोनों बेटे ही सारा खाना बनाते थे.

मेलिन के पिता और भाई खाने के बहुत शौकीन थे और खा-खाकर तीनों मोटे और आलसी बन गए थे.

मेलिन को भी खाना पसंद था पर किन्हीं और कारणों के लिए. चाइना-टाउन में आए लोग अकेले थे, वह थके हुए और उदासीन रहते थे. उनकी पत्नियाँ और परिवार चीन में उनकी प्रतीक्षा में थे.

लेकिन एक अच्छा पकवान खाकर उनके चेहरे पर मुस्कराहट आ जाती थी. इसलिए उन्हें उत्साहित करने के लिए, सबसे बढ़िया मसाले और सामग्री का प्रयोग कर, मेलिन उनके लिए खाना बनाती थी.

फिर एक दिन घोषणा हुई कि दक्षिण चीन का गवर्नर नगर में आ रहा था. उसके सम्मान में होने वाले भोज के लिए चाइना-टाउन के हर रेस्तरां को अपना सबसे बढ़िया पकवान भेजने के लिए कहा गया.

मेलिन के पिता ने उसे आदेश दिया कि, खर्च की परवाह किए बिना, अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग कर वह एक नया उत्तम पकवान गवर्नर के भोज के लिए बनाये. मेलिन ने बाज़ार जाकर सबसे ताज़ा मछली खरीदी. बगीचे में जाकर हरी सब्ज़ियाँ और जड़ी-बूटियाँ चुनीं.
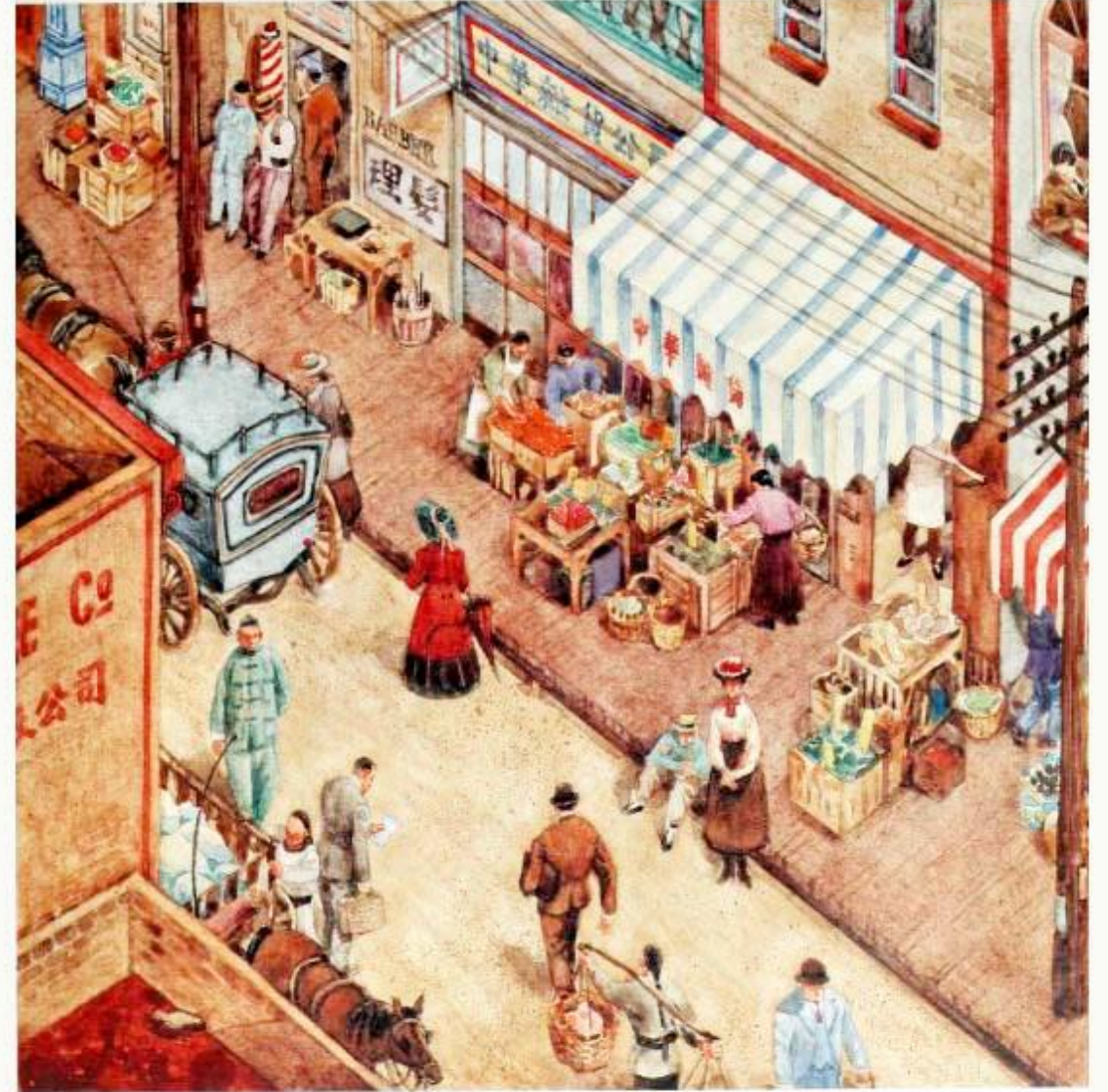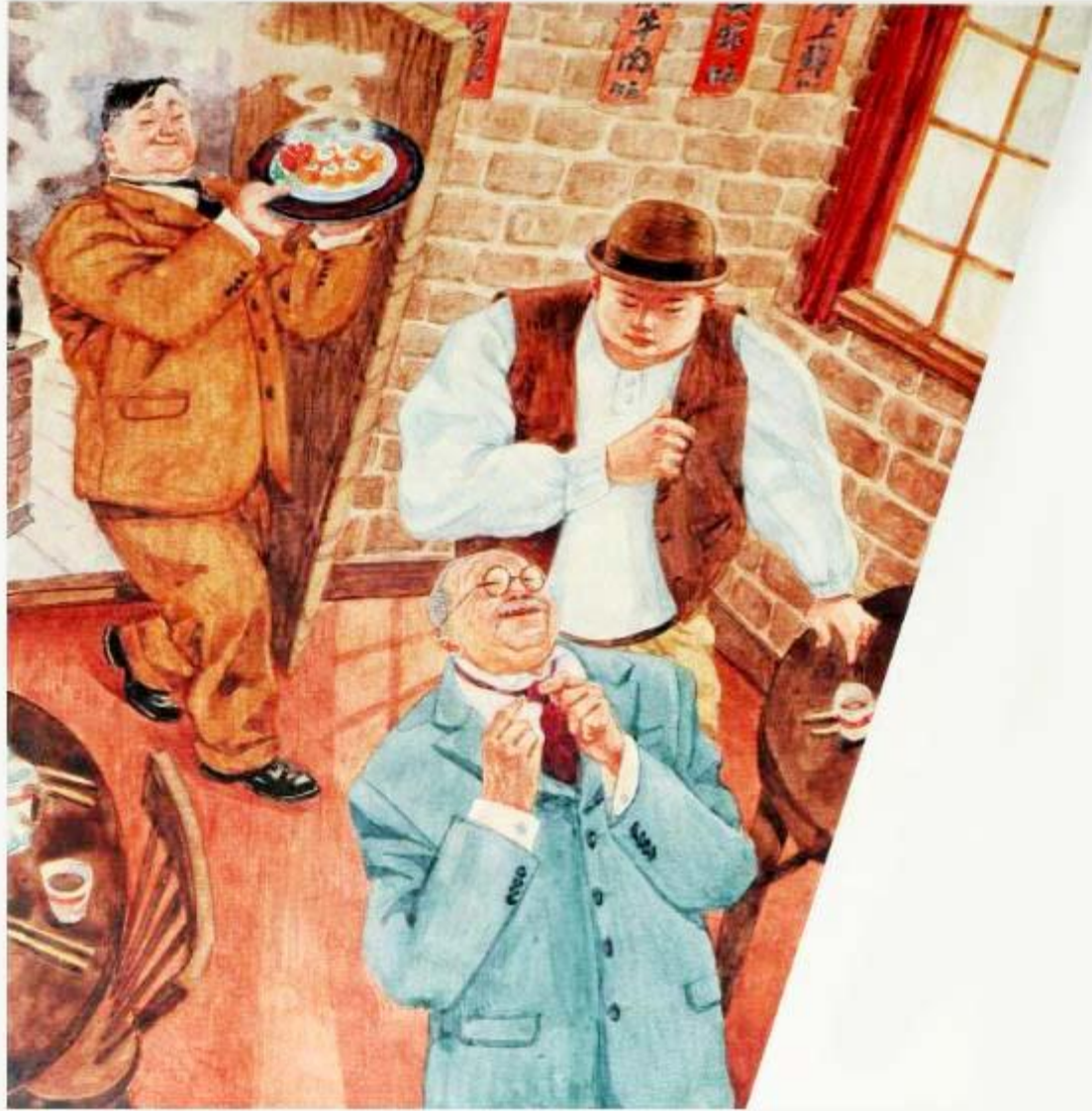
बहुत शीघ्र ही उसने एक ऐसा पकवान बनाया जिसमें से बहुत मनमोहक सुगंध आ रही थी. उसने इस व्यंजन का नाम रखा, *हिमपात में गुलाब के फूलों का गायन.*

मेलिन के पिता ने प्रसन्नता से वह पकवान सूँघा और उसे लेकर भोज के लिए चल दिया. उसने सबसे बढ़िया वस्त्र पहन रखे थे, उसके बेटे उसके पीछे-पीछे चल रहे थे.

गवर्नर को भी खाने का बहुत शौक था. भोजन से सजे थाल देख कर वह प्रसन्नता से खिल उठा. हर प्रकार का माँस, हर रंग की सब्ज़ी, हर प्रकार के मसालों की सुगंध वहाँ प्रस्तुत थी. वह उत्सुकता से सब पकवान चखने लगा.

सारे व्यंजन खाने के बाद उसने मेलिन की थाली की ओर संकेत किया और कहा, “वह पकवान सबसे प्रशंसनीय है. उसे खाकर मुझे चीन की याद आने लगी, तथापि इसने मुझे किसी दूसरे लोक में पहुँचा दिया. मुझे बताओ यह किस ने बनाया है?”

मेलिन का पिता डगमगाते हुए आगे आया और वही झूठ उसने दोहराया जो वह कई बार बोल चुका था. “महाराज, मेरे दोनों बेटों ने यह पकवान बनाया था.”

“क्या ऐसा है?” गवर्नर विचारपूर्वक अपनी दाढ़ी को सहलाने लगा. “तब मेरे रसोइये को इसे बनाना सिखाओ. मैं चीन के सम्राट को यह पकवान भेंट करूँगा और तुम्हें पुरस्कार दूँगा.”

मेलिन के पिता और भाई घर दौड़े आए. वह झटपट रसोई के अंदर आए और मेलिन को विवश किया कि पकवान की सारी सामग्री उन्हें बताये. फिर उनके दबाव में मेलिन ने उन्हें दिखाया कि किस तरह उसने मछली और सब्ज़ियाँ काटी थीं, कैसे विभिन्न मसालों को मिलाया था.

पकवान की सारा सामग्री उन्होंने टोकरियों में भर ली और जल्दी-जल्दी वापस चल दिये.

गवर्नर और उसके रसोइये के सामने एक चूल्हा जलाया गया. मेलिन के भाइयों ने मछली काटी, सब्ज़ियाँ साफ की और मसाले पीसे. उन्होंने आग का तेज़ किया और पकवान बनाया. लेकिन उसे चखते ही गवर्नर ने थाली दूर पटक दी.

“तुम ढोंगी हो! क्या तुम ने मुझे मूर्ख समझा है?” वह गरजा. “यह *हिमपात में गुलाब के फूलों का गायन* नहीं है!”

मेलिन का पिता डरते-डरते आगे आया और खाने की सामग्री को देखने लगा. “अरे...अरे, यहाँ एक मसाला नहीं है,” उसने हकलाते हुए कहा.

“उसका नाम बताओ और मैं वह मसाला मंगवा दूँगा,” गवर्नर ने चिल्लाकर कहा.

लेकिन मेलिन का पिता कोई उत्तर न दे पाया, क्योंकि मसालों के बारे में वह कुछ न जानता था.

मेलिन के बड़े भाई ने झटपट उस खाने को चखा और बोला, “अरे, इसमें एक सब्ज़ी कम है!”

“उसका नाम बताओ और मेरे आदमी वह सब्ज़ी अभी ले आयेंगे!” गवर्नर ने आदेश दिया.

लेकिन उसे कोई उत्तर न मिला, क्योंकि मेलिन के बड़े भाई के खाने के बारे में कोई जानकारी न थी.

मेलिन के छोटे भाई ने मछली बेचने वाले को दोषी ठहराया. “उसने हमें गलत किस्म की मछली दे दी!” वह चिल्लाया.

“फिर सही मछली का नाम बताओ और मेरे आदमी वही मछली ले आयेंगे!” गवर्नर ने कहा. उसे फिर कोई उत्तर नहीं मिला.

मेलिन के पिता और भाई भय से थरथर कांपने लगे और अपने घुटनों के बल झुक गये. जब गवर्नर ने गुस्से में अपनी मुट्ठियों से कुर्सी पर प्रहार किया तो सच्चाई बाहर आ गई. यह जान कर कि वह पकवान एक लड़की ने बनाया था, सारे अतिथि आश्चर्यचकित हो गए. जब गवर्नर ने मेलिन को बुला भेजा तो उसके पिता ने लज्जा से अपना सिर झुका लिया.
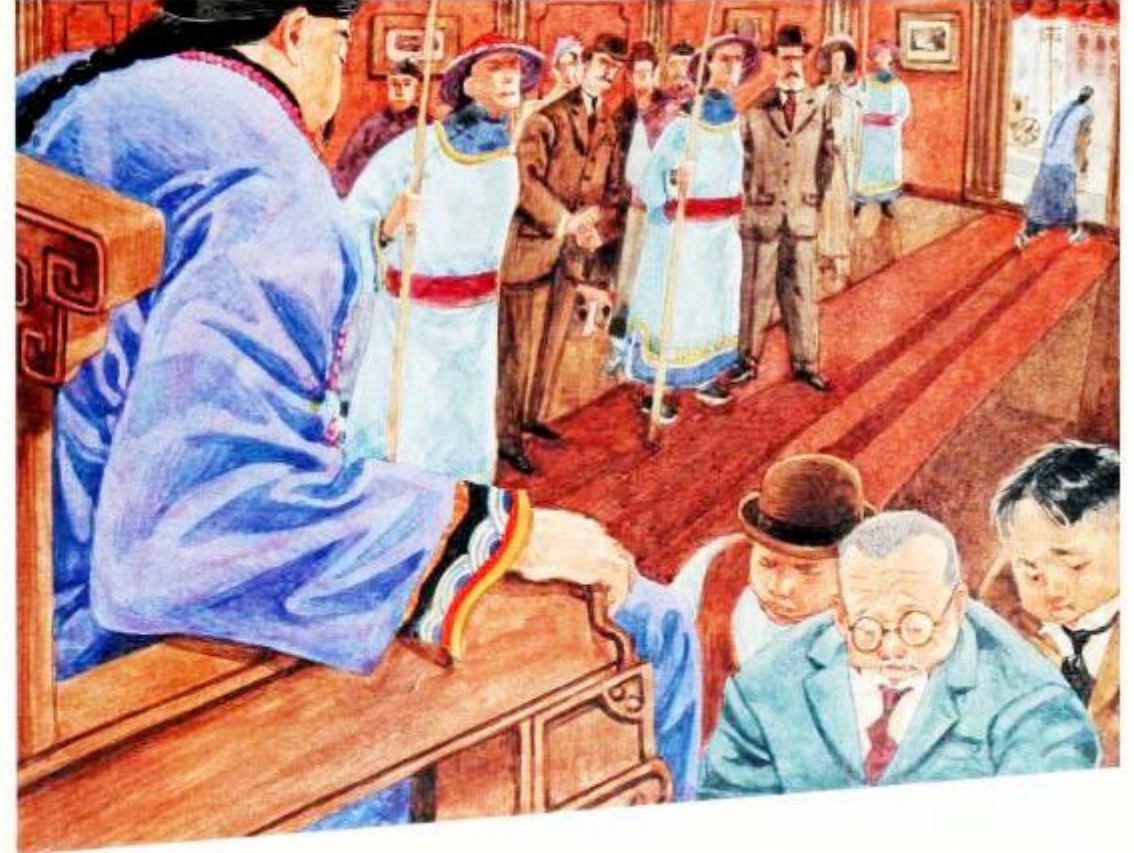
वहाँ आकर मेलिन गवर्नर के सामने खड़ी हो गई. "महाराज, यह पकवान आप चीन नहीं ले जा सकते," उसने कहा.

"क्या?" गवर्नर ने चिल्लाकर कहा. "तुम्हारा इतना साहस कि इस अद्भुत पकवान को चखने का अवसर सम्राट को देने से तुम मना कर रही हो?"

"यह पकवान नये संसार का है," मेलिन ने कहा. "इसे आप पुराने चीन में नहीं बना सकते."

लेकिन गवर्नर ने उसकी बात की परवाह नहीं की और त्यौरी चढ़ा कर उसे देखा. "यहाँ मैं तुम्हारे पिता का जीवन कष्टदायक बना सकता हूँ," उसने धमकाते हुए कहा. तब मेलिन ने कहा, "चलिये, आप और मैं यह पकवान साथ-साथ बनाते हैं ताकि मेरी बात की सच्चाई आप स्वयं जांच लें."
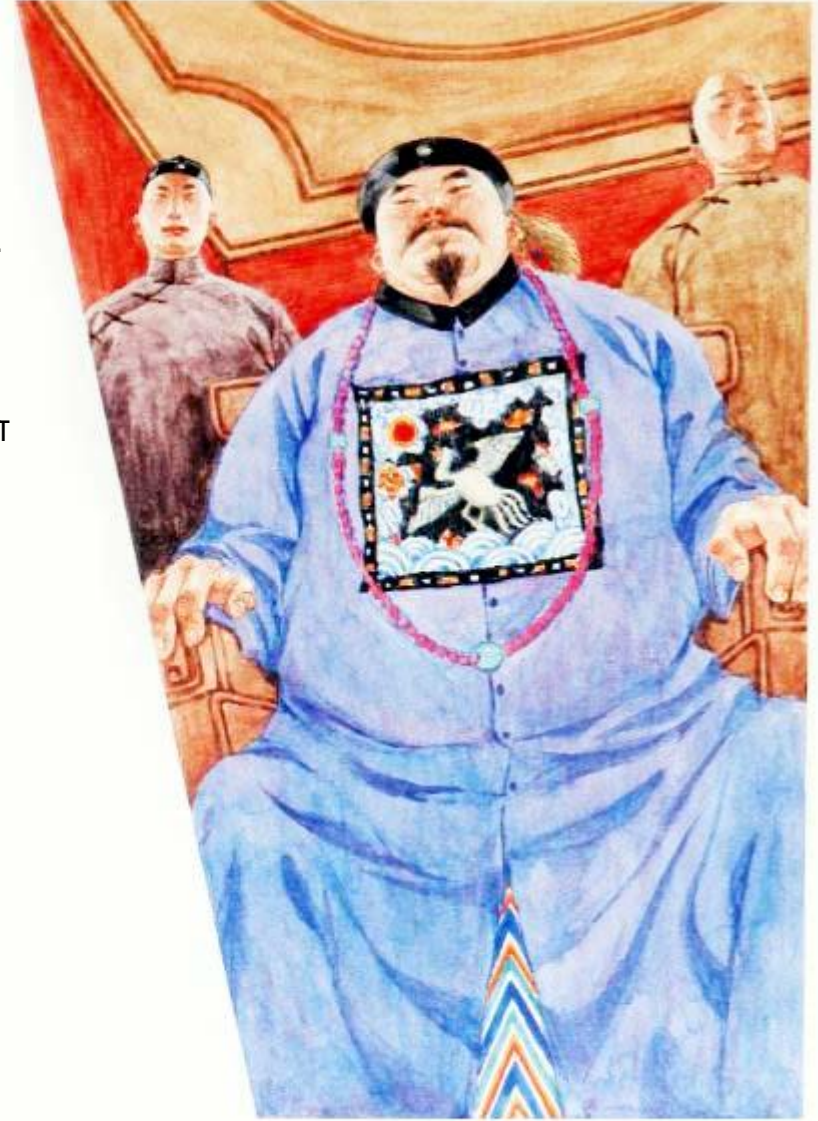
उसके साहस को देखकर सारे मेहमान दंग रह गये. लेकिन गवर्नर ने अपना सिर हिलाया, आस्तीन को मोड़ कर ऊपर कर लिया और एप्रन पहन लिया. मेलिन और गवर्नर ने एक साथ मछली और सब्ज़ियों को काटा, उनके टुकड़े किये. पास-पास उन्होंने कड़ाहियाँ गर्म कीं और एक जैसे मसाले मिलाये.

जब दोनों पकवान आखिरकार बन कर तैयार हो गये तो गवर्नर ने दोनों को चखा. उसका चेहरा फीका पड़ गया क्योंकि दोनों का स्वाद अलग था.

“तुम्हारा रहस्य क्या है?” गवर्नर ने पूछा, “हम ने तो एक जैसी सामग्री का उपयोग किया था और पास-पास ही इसे पकाया था!”

“अगर हम दोनों कागज़, काला रंग और बुरुश लेकर चित्र बनाने बैठ जायें तो क्या हम एक जैसा चित्र बना सकेंगे?” मेलिन ने पूछा.

उस दिन से चाइना-टाउन में मेलिन एक महान रसोइये और बुद्धिमान लड़की के रूप में प्रसिद्ध हो गई. उसकी प्रसिद्धि दूर चीन तक भी पहुँच गई.

लेकिन गवर्नर के बहुत प्रयास के बाद भी सम्राट नये संसार का सुस्वादु पकवान, *हिमपात में गुलाब के फूलों का गायन,* कभी न चख पाये.